



Hargharpanditji

॥ अजा एकादशी ॥
॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ अजा एकादशी ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्री लक्ष्मीनारायणाय नमः॥

अजा एकादशी का परिचय

भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अजा एकादशी अत्यंत पुण्यदायिनी और पापों का नाश करने वाली मानी जाती है। इस एकादशी का माहात्म्य भगवान श्रीकृष्ण ने धर्मराज युधिष्ठिर को बताया था। इस व्रत के प्रभाव से बड़े-बड़े पाप भी नष्ट हो जाते हैं और साधक को सुख, समृद्धि तथा अंत में मोक्ष की प्राप्ति होती है।

कथा प्रारंभ

प्राचीन समय में हरिश्चंद्र नाम के एक महान प्रतापी, सत्यवादी और धर्मनिष्ठ राजा थे। वे सत्य के पालन के लिए समस्त संसार में प्रसिद्ध थे। एक समय ऐसा आया कि पूर्व जन्म के कर्मों के प्रभाव से उन्हें अनेक कठिन कष्टों का सामना करना पड़ा।

राजा हरिश्चंद्र का राज्य, धन और वैभव सब कुछ उनसे छिन गया। यहाँ तक कि उन्हें अपनी प्रिय पत्नी शैव्या (तारामती) और पुत्र रोहिताश्व को भी बेच देना पड़ा। स्वयं राजा ने भी जीविका के लिए श्मशान में चांडाल के यहाँ सेवक का कार्य स्वीकार कर लिया। उनका कार्य अंतिम संस्कार के लिए आने वालों से कर (शुल्क) लेना था।

एक दिन उनके पुत्र रोहिताश्व को सर्प ने डस लिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। पुत्र के शव को लेकर उनकी पत्नी तारामती अत्यंत दुःखी होकर श्मशान पहुँची। उसके पास अंतिम संस्कार का कर देने के लिए धन नहीं था। राजा हरिश्चंद्र अपने कर्तव्य और सत्य के पालन के कारण अपनी पत्नी से भी कर माँगने लगे। यह दृश्य अत्यंत करुणामय था।

पत्नी ने अपने वस्त्र का आधा भाग कर के रूप में देने का प्रयास किया। उसी समय देवताओं और महर्षियों ने राजा की सत्यनिष्ठा की परीक्षा पूर्ण होने की घोषणा की। तभी महर्षि गौतम वहाँ प्रकट हुए और उन्होंने राजा हरिश्चंद्र से कहा—

"हे राजन्! भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अजा एकादशी का व्रत अत्यंत पवित्र और समस्त पापों का नाश करने वाला है। यदि आप श्रद्धा और नियमपूर्वक इस व्रत का पालन करेंगे, तो आपके समस्त दुःख दूर हो जाएंगे।"

राजा हरिश्चंद्र ने महर्षि गौतम के निर्देशानुसार अजा एकादशी का व्रत किया। उन्होंने पूरे मन से भगवान श्रीहरि विष्णु की पूजा की, रात्रि में जागरण किया और द्वादशी के दिन विधिपूर्वक पारण किया।

व्रत का फल

अजा एकादशी के प्रभाव से राजा हरिश्चंद्र के सभी पाप नष्ट हो गए। उनका खोया हुआ राज्य उन्हें पुनः प्राप्त हो गया। उनकी पत्नी तारामती और पुत्र रोहिताश्व पुनः जीवित हो गए। समस्त परिवार सुखपूर्वक रहने लगा। अंत में राजा हरिश्चंद्र ने दीर्घकाल तक धर्मपूर्वक राज्य किया और जीवन के अंत में भगवान विष्णु की कृपा से दिव्य लोक को प्राप्त हुए।

कथा का संदेश

अजा एकादशी का व्रत श्रद्धा, नियम और भगवान विष्णु की भक्ति के साथ करने से—

सभी पापों का नाश होता है।

जीवन के संकट और दुःख दूर होते हैं।

सत्य, धर्म और सदाचार की रक्षा होती है।

धन, सुख, शांति और समृद्धि की प्राप्ति होती है।

पितरों को भी पुण्य मिलता है।

अंत में भगवान विष्णु के परम धाम की प्राप्ति होती है।

पाप नष्ट होकर जीवन में सुख-शांति और अंततः मोक्ष की प्राप्ति होती है।

॥ अजा एकादशी व्रत कथा का सार ॥

जो श्रद्धालु अजा एकादशी का व्रत करता है, कथा का श्रवण या पाठ करता है तथा भगवान श्रीहरि विष्णु का स्मरण करता है, उसके समस्त पाप नष्ट होकर जीवन में सुख-शांति और अंततः मोक्ष की प्राप्ति होती है।

॥ श्री अजा एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥

